दलित जागरण के अग्रदूत–स्वामी अछूतानंद

डा0 नीता

एसोसिएट प्रोफेसर

इतिहास विभाग

नारी शिक्षा निकेतन

स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लखनऊ

भारत ऋषियों–मुनियों, महान पुरुषों, संतों का देश रहा हैं। आर्यों के आगमन से पहले भी इस देश के मूल निवासी संत, महापुरुष, क्रांतिकारी पैदा हुए, आर्यों के बाद भी यह क्रम जारी रहा है। जब कोई संत, क्रांतिकारी पैदा होता हैं, तो वह जाति, धर्म तथा समाज के आधार पर पैदा नहीं होता हैं। जन्म से ही वह किसी जाति, धर्म व समाज से संबंध नहीं रखता, परन्तु जैसे–जैसे वह बढ़ता जाता हैं, बड़ा होता रहता है, उस पर धर्म व जाति की काली छाया पड़ती रहती है। दलित समाज में संत तथा महापुरुष पैदा होता हैं तो उसको उतना सम्मान नहीं मिलता जितना की जाति व धर्म के आधार पर उसे जिल्लतों का सामना करना पड़ता हैं। इस प्रकार संतों व महापुरुषों के महान कार्यों, उनके ज्ञान तथा अनुभवों को भुलाने का प्रयास किया जाता हैं।[1]

सदियों से अछूत समाज वर्ण, हिन्दू, मुसलमान तथा अंग्रेज शासको की राजनैतिक एवं धामिर्क शोषण की चक्की में पिसता रहा हैं। उसकी मान, मर्यादा एवं जान–माल सभी कुछ अत्याचारियों की लोलुप दृष्टि का शिकार होती रही हैं। शिक्षा प्रतिबधित होने के कारण अज्ञान में सही मार्गदर्शन पाने के लिए इधर–उधर भटक रहा था। ऐसे समय में स्वामी अछूतानंदा के रूप में एक ऐसी शक्ति का प्रादुर्भाव हुआ जिसने सम्पूर्ण अछूत जाति को एक नवीन दिशा प्रदान की, उनमें धार्मिक उन्माद के स्थान पर राजनैतिक चेतना को जाग्रत किया।[2]

स्वामी अछूतानंद का जन्म 1879 में पूर्णिमा वैशाख के दिन सोरिख गाँव में चमार जाति में हुआ था, जो उत्तर प्रदेश के फरुखाबाद जिले की चिब्राम् तहसील में स्थित हैं। उनके बचपन का नाम हीरालाल था।[3] इनके पिता का नाम मोतीराम, माता श्रीमती रामप्यारी देवी, चाचा का नाम मथुरा प्रसाद था।[4] पिता जी का देहांत उनके बचपन में ही हो गया था। सवर्णों के अत्याचारों से पीड़ित होकर स्वामी जी के परिवारजनों ने भी अपना गाँव छिबरामऊ छोड़ दिया। उनके पिता स्वामी जी की ननिहाल अमकी सिरसागंज जिला मैनपुरी में जा बसे थे। यहाँ पर रहते हुए स्वामी जी का विवाह इटावा जिले के राठान का नंगला ग्राम में दुर्गावती के साथ सम्पन्न हुआ था।

सवर्णो के जुल्मों व अत्याचारों से वो इतने दुःखी हो चुके थे कि आखिर उन्हें सामाजिक सम्मान के लिए संघर्ष का रास्ता चुनना पड़ा।[5] वह आर्थिक व सामाजिक भिन्नता के कारण शिक्षा ग्रहण नहीं कर सके। हीरालाल ने सन्यासियों से हिन्दी, संस्कृत, फारसी, उर्दू, अंग्रेजी, मराठी, बंगला तथा गुरमुखी सीखी। उनका आध्यात्मिकता की ओर झुकाव देखकर लोग उन्हें पहले हरिहरानंद व बाद में अछूतानंद के नाम से सम्बोधित करने लगे।[6]

अछूतानंद सबसे पहले आर्य समाज में सम्मिलित हुए क्योंकि वह इसे अलग धर्म समझते थे किन्तु जल्द ही आभास हुआ कि यह तो हिंदू धर्म का ही प्रचार तंत्र हैं। वहाँ भी पाखंड व अंधविश्वास था। इसलिए वह उससे अलग हो गए। उनका मानना था कि हिंदू धर्म, स्वर्ग–नरक, पाप व पुण्य का सिद्धान्त, भेदभाव और उत्पीड़न का ही दूसरा नाम है। वह कहते थे कि–**''कोई भी व्यक्ति जो किताबें पढ़ता हो और ध्यान को अपने व्यवहार में लाता हो उन सबकी जानकारी के बाद निश्चित ही उसमें समझ विकसित होती हैं तथा साथ ही वह भगवान, अंधविश्वास से दूर हो जाता हैं।''** अछूतानंद, गौतम बुद्ध और कार्लमार्क्स से बहुत अधिक प्रभावित थे।[7]

स्वामी अछूतानंद जी को इस बात का बहुत अफसोस था कि, **''उन्होंने आर्य समाज में रहकर अपना मूल्यवान समय खो दिया।''** उन्होंनू अछूतों का आहवान किया कि **''वे संगठित हो और आत्मनिर्भर बनें।''** मनुवादियों के जााति और धर्म के आधार पर बाँटने के षड़यंत्र से बचने के लिए उन्होंने लोगों को सावधान किया।[8]

हिन्दू धर्म में सदियों से प्रचलित अस्पृश्यता, जाति प्रथा, सामंतवाद, सामाजिक विषमता और रूढियों पर प्रहार किया। उन्होंने कहा **''आज हम मुट्ठी भर हैं। कल के भारत में घर–घर में हमारा समाज सुधारक और नेता होगा। भारत उनका होगा जो मेहनत करके खाएगा।''**[9] धर्म, अर्थ, कर्म, जाति आदि के आधारों पर किये गये भेदों के प्रति घोर विरोधी वातावरण बनाने के लिए नगर–नगर, गाँव–गाँव, गली–गली घूम–घूम कर जन चेतना का संचार किया।[10]

स्वामी जी ने अछूतों के हित के लिए संघर्ष करना निश्चित किया। 1905 ई0 में दिल्ली में 'अछूत आन्दोलन' की शुरुआत की। यहाँ पर वीर रतन, देवीदास जटिया, जगतराम जटिया का स्वामी जी का पूरा सहयोाग मिला। चेतना उत्पन्न करने के लिए **''अछूत पत्रिका''** का सम्पादन किया। इसके माध्यम से सम्पूर्ण भारत के दलित शोषितों को जाग्रत करने की इच्छा व्यक्त की।[11]

सन् 1922 में स्वामी जी ने एक राजनैतिक–सामाजिक जन जाग्रति पैदा करने के लिए **''आदि हिंदू आंदोलन''** चलाया, जो पूर्ण : धार्मिक आडम्बरों के विपरीत था। इस आंदोलन के द्वारा अछूतों को जाग्रत करना था।[12]

सन् 1922 ई0 में इंग्लैण्ड के सम्राट जार्ज पंचम के पुत्र प्रिंस ऑफ वेल्स का दिल्ली आगमन हुआ। उनके स्वागत के लिए अछूत सम्मेलन का आयोजन हुआ। उस अवसर पर उनके स्वागत के साथ ही उनको एक 17 सूत्रीय माँग–पत्र दिया गया जो इस प्रकार था–

1. आदि हिन्दुओं का पृथक से चुनाव हो तथा पृथक से प्रतिनिधित्व दिया जाए।
2. अछूतों की प्रगति हेतु स्कूल विद्यालय खोले जाए।
3. अस्पृश्यता निवारण हेतु कड़ा कानून बनाया जाए।
4. शिक्षित अछूतों को शासकीय सेवा में लिया जाए।
5. स्थानीय संस्थाओं जैसे नगरपालिका, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, ग्राम पंचायत, टाऊन एरिया, नोटी फाइड एरिया आदि में अछूत सदस्य नामजद किए जाए।
6. अछूतों को व्यापार एवं दुकानदारी का कार्य करने की स्वतंत्रता दी जाए।
7. बेगार प्रथा का समूल नाश किया जाए।
8. अछूतों को सवर्ण हिन्दुओं के समान सामाजिक अधिकार प्राप्त हों।

9. प्रत्येक शासकीय, अशासकीय कमेटियों में संख्या के अनुपात में अछूतों को प्रतिनिधित्व प्रदान किया जाए।
10. अछूत छात्रों को छात्र–वृत्ति प्रदान की जाए।
11. अछूत बहुल गाँवों में अछूत विद्यालय स्थापित किया जाए।
12. पुलिस तथा फौज में अछूतों को भी प्रवेश दिया जाए।
13. मजदूरी में वृद्धि की जाए।
14. ग्रामीण चौकीदार पद पर अछूत रखे जाए।
15. अछूत कृषकों को परती भूमि के पट्टे दिए जाए।
16. प्रान्तीय विधान सभाओं में अछूत भी लिए जाए।
17. उपरोक्त 16 मांगो को देशी राज्यों में भी लागू किया जाए।

प्रिंस ऑफ वेल्स के इंग्लैण्ड जाने पर लन्दन के सेक्रेटरी ऑफ स्टेट फार इण्डिया का भारत के वायसराय के नाम सख्त आदेश आया कि अछूतों को प्रत्येक नगर पालिका, नोटीफाइडेरिया, टाउन एरिया में एक–एक सदस्य के रूप में नामजद किया जाए। इस आदेश का कड़ाई से पालन हुआ। इससे अछूतों के लिए आगे का मार्ग प्रशस्त हुआ।[13]

सन् 1923 ई0 में स्वामी जी ने 'आल इंण्डिया आदि हिंदू महासभा' की स्थापना की थी। उत्तर भारत की अछूत जातियों में स्वयं उत्थान एवं जन जागृति की भावना पैदा करने के लिए इसकी स्थापना की गई। स्वामी जी ने इटावा में ''हिन्दू कान्फ्रेंस'' का आयोजन किया। स्वामी जी ने अछूतो की सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि सवर्णों द्वारा फैलाए गए जाति भेद, धर्म भेद और छुआछूत के विरोध में सभी अछूत नागरिकों को संगठित होकर मुकाबला करना होगा। सवर्णों ने अछूतों के साथ अमानवीय व्यवहार करना भी प्रारम्भ कर दिया। इस प्रकार घटनाओं से दुःखी होकर स्वामी जी सन् 1925 में कानपुर चले गये और वहाँ'ईदगाह बैनाझावर' में रहने लगे तथा प्रेस की स्थापना करके ''आदि हिंदू'' मासिक अखबार निकालना शुरू किया।

सन् 1926 में स्वामी जी ने इटावा के अंतर्गत ''आदि हिंदू सम्मेलन' आयोजित किया। उन्होंने भारत के इलाहाबाद, लखनऊ, कानपुर, कलकत्ता, अमरावती, अल्मोड़ा, जयपुर, बम्बई तथा पंजाब आदि क्षेत्रों के अंदर अखिल भारतीय एवं जिला स्तर पर सैकड़ों सम्मेलन किए, जिससे अछूतों में अभूतपूर्व सामाजिक चेतना की लहर पैदा हुई। इसके पश्चात् सन् 1927 में स्वामी जी ने कानपुर में 'अछूत मंच' तैयार किया। उन्होंने कहा कि हिंदू और मुसलमानों की भाँति अछूतों को भी पूर्ण आजादी मिलनी चाहिए, क्योंकि आजादी के असली हकदार अछूत हैं।[14]

उक्त मंत्र से कानपुर में सन् 1927 में स्वराज्य, पूर्ण स्वराज्य की माँग की। स्वामी अछूतानंद ने साइमन कमीशन के सामने कहा था, **''हमें आपकी सहानुभूति की जरूरत नहीं हैं। हमें अपने अधिकार चाहिए। व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि हम मूल भारतवासी अपना जीवन प्रतिष्ठा और सम्मान के साथ जी सके। अंग्रेजों को केन्द्र और राज्यों में उत्तरदायी सरकार की स्थापना करनी चाहिए। उन्हें जमींदारी व्यवस्था खत्म करने के लिए कानून बनाना चाहिए। उन्हें स्थानीय राजाओं तथा नवाबों की गतिविधियों पर अंकुश लगाना चाहिए।''**[15]

सन् 1928 ई0 में स्वामी अछूतानंद की भेंट डा0 अम्बेडकर से बम्बई में आदि हिन्दू सम्मेलन में हुई। दोनों ने मिलकर दलितों के हक

के लिए संघर्ष करने का निश्चय किया।[16] सन् 1932 में बाबा साहेब और गाँधी के मध्य पूना पैक्ट समझौता हुआ, जिसमें स्वामी अछूतानंद के साथ–साथ राजा अक्का जी गबई श्रीनिवासन के हस्ताक्षर हुए।[17]

स्वामी अछूतानंद हरिहर ने सामाजिक वर्ण भेद की परम्परा को समाप्त करने के लिए धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन किया। स्वर्ग–नरक, पाप–पुण्य, पूर्वजन्म, पुनर्जन्म, देवी–देवता, कथा–भागवत, यश–जागरण की मान्यताओं का खण्डन किया। स्वामी जी उपदेशक ही नहीं, वे कवि भी थे। उन्होंने अछूत और आदि हिन्दू अखबारों का सम्पादन किया। उनकी कुछ रचनाएँ जिनमें शम्बूक बलिदान (नाटक), मायानाद बिलदान जीवनी, अछूत पुकार (भजनावली), पाखण्ड खण्डिनी (मीमांसा), आदि वंश का डंका (कवितावली), राम राज्य न्याय (नाटक) प्रमुख हैं। इस दृष्टि से स्वामी जी को दलित साहित्य का पथम रचनाकार कहा जा सकता है।

अखिल भारतीय अछूत कांग्रेस को सम्बोधित करते हुए स्वामी जी ने कहा था–

सभ्य सबसे हिन्द के प्राचीन हैं हकदार हम।

है बनाया शूद्र हमको थे कभी सरदार हम।।

नीचे गिराये पर अछूते, छूत से हम हैं बरी।

आदि हिन्दू हैं न शंकर, वर्ण में हम हैं हरी।।

अब नहीं हैं वह जमाना, जुल्म हरिहर मत सहो।

तोड़ दो जंजीर, जकड़े क्यों गुलामी में रहो।।

आदि वंश डंका में वे कहते हैं–

जुल्म पापी ने किया, हमको मिटाने के लिए।

वर्ण–शंकर लिख दिया हैं, दिल दुखाने के लिए।।

कूप का मेढक बना, जकड़ा हमें दासत्व मं।

कानून था उनको नहीं, विद्या पढ़ाने के लिए।।

मनुस्मृति को दलितों का दुश्मन उन्होंने लिखा–

निसदिन मनुस्मृति हमको जला रही हैं।

ऊपर न उठने देती, नीचे गिरा रहा है।।

ब्राह्मण व क्षत्रियों को सबका बनाया अफसर।

हमका पुराने उतरन पहनो बता रही हैं।।

जो कार्य डा0 अम्बेडकर ने महाराष्ट्र में किया वही कार्य उत्तर भारत के स्वामी अछूतानन्द हरिहर ने किया।[18]

सामाजिक न्याय के महान सुधारक और योद्धा स्वामी अछूतानंद 20 जुलाई, 1936 ई0 में 54 वर्ष की आयु में बेनाझाबर कानपुर में परिनिर्माण को प्राप्त हुए। स्वामी जी सदैव अछूतों के उत्थान व सामाजिक बंधनों को काटने में लगे रहे। जीवन भर वर्ण–व्यवस्था के खिलाफ लड़ते रहे। हिन्दू समाज के सवर्णों के द्वारा उनका विरोध भी हुआ, परन्तु उन्होंने अपना रास्ता कभी नहीं बदला। दलित समाज उन्हें सदैव आदर व सम्मान सहित याद करता रहेगा।[19]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- चरन सिंह भंडारी, शोषित समाज के क्रांतिकारी प्रवर्तक, सम्यक् प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2006, पृष्ठ–103
- डी0सी0 डीन्कर, स्वतंत्रता संग्राम में अछूतों का योगदान, गौतम बुक सेन्टर, दिल्ली, संस्करण–2007, पृष्ठ–104
- जुगल किशोर, प्रकाश चन्द्र राय, रणजीत कुमार मण्डल, भारत के अग्रणी समाज सुधारक, सैन्चुरी पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2002, पृष्ठ–157
- माता प्रसाद, भारत में दलित जागरण और उसके अग्रदूत, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2010, पृष्ठ–66
- चरन सिंह भंडारी, शोषित समाज के क्रांतिकारी प्रवर्तक, सम्यक् प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2006, पृष्ठ–104
- राम विलास भारती, बीसवीं सदी में दलित समाज, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा0) लिमिटेड, नई दिल्ली, पृष्ठ–57, 58
- पूर्वोक्त पृष्ठ–58
- जुगल किशोर, प्रकाश चन्द्र राय, रणजीत कुमार मण्डल, अनुवादक–मोहनदास नैमिशराय, भारत के अग्रणी समाज सुधारक, सैन्चुरी पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2002, पृष्ठ–158
- कन्हैया लाल चंचरीक, भारत में दलित आंदोलन एक मूल्यांकन, भाग–1, सृष्टि बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, प्रकाशन–2006 पृष्ठ–182–183
- डी0सी0 डीन्कर, स्वतंत्रता संग्राम में अछूतों का योगदान, गौतम बुक सेन्टर, दिल्ली, संस्करण–2007, पृष्ठ–105
- माता प्रसाद, भारत में दलित जागरण और उसके अग्रदूत, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण–2010, पृष्ठ 66, 67
- चरन सिंह भंडारी, शोषित समाज के क्रांतिकारी प्रवर्तक, सम्यक् प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2006, पृष्ठ–105
- माता प्रसाद, भारत में दलित जागरण और उसके अग्रदूत, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण–2010, पृष्ठ 67, 68
- चरण सिंह भंडारी, शोषित समाज के क्रांतिकारी प्रवर्तक, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2006, पृष्ठ 106–107
- जुगल किशोर, प्रकाश चन्द्र राय, रणजीत कुमार मण्डल, अनुवादक–मोहनदास नैमिशराय, भारत के अग्रणी समाज सुधारक, सैन्चुरी पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2002, पृष्ठ–159
- माता प्रसाद, भारत में दलित जागरण और उसके अग्रदूत, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण–2010, पृष्ठ–68
- चरण सिंह भंडारी, शोषित समाज के क्रांतिकारी प्रवर्तक, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2006, पृष्ठ–107
- माता प्रसाद, भारत में दलित जागरण और उसके अग्रदूत, सम्यक प्रकाशन, नई

ISSN: 2349-1876 (Print) | ISSN : 2454-1826 (Online)

दिल्ली प्रथम संस्करण–2010, पृष्ठ–68, 69

- चरण सिंह भंडारी, शोषित समाज के क्रांतिकारी प्रवर्तक, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2006, पृष्ठ–107

Copyright © 2017 *Dr. Neeta*. This is an open access refereed article distributed under the Creative Common Attribution License which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.